अन्तरा-शब्दशक्ति

आशियाना

कथा संग्रह

शशिकला व्यास

आशियाना

(कथा संग्रह)

शशिकला व्यास

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-73-4"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- शशिकला व्यास
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- कनुप्रिया व्यास
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
ASHIYANA BY SHASHIKALA VYAS
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	प्रस्तावना	5
1.	दादाजी का नयनतारा	7
2.	साथी हाथ बढ़ाना	8
3.	विदाई समारोह	9
4.	स्वर्ण पदक	11
5.	सुख दुःख जीवन के पहलू	12
6.	सादगी में ही सुंदरता	13
7.	देने का असीम सुख	14
8.	रूहानी मदद	15
9.	वो उड़ती हुई पतंग	16
10.	कर्मचारी का स्वांग	17
11.	नमामि देवी नर्मदे	18
12.	दादी की लाडली	20
13.	होली का हुड़दंग	21
14.	कुदरत का करिश्मा	22
15.	आकाश का परिंदा	23
16.	अंतर्मन की आवाज	24
17.	दोस्ती की अनोखी मिसाल	26
18.	विभूति का संघर्ष	27
19.	पापा की याद में	28
20.	संयोग .. शुभ मुहूर्त में	29

21. मन की झोली 30
22. बुढ़ापा 32

प्रस्तावना

यह कथा संग्रह पूज्यनीय पिताजी (ससुर जी) स्वर्गीय श्री मोतीचंद व्यास जी को समर्पित कर गहन कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हूँ, जिन्होंने हमें आदर्श व्यक्तित्व निखारने एवं संस्कारों में ढालकर सपनों को संजोने के लिए योगदान दिया है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी संस्मरनित् रहेगा।

हर किसी के सपनों का अरमान होता है कि अपना खुद का 'आशियाना' हो जहाँ पूरा परिवार सुखद एहसास लिए खुशहाल जीवन व्यतीत कर सुरक्षित रह सके। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कठिन परिश्रम परिस्थतियों का सामना करना पड़ता है।

रिश्तों की कड़ियों को जोड़ते मजबूत पकड़ बनाते व्यक्तित्व की अनूठी मिसाल कायम करने से ही आनंद की अनुभूति प्राप्त की जा सकती है। श्रेष्ठ मार्गदर्शन में वृहद लक्ष्य एवं प्रेरणा के साथ अग्रसर होने पर ही 'आशियाना' निर्मित किया जाता है, अपने आपको झोंक कर कठिन परिश्रम से बनाये हुए आशियाना को अपनों को ही सौंप दिया जाता है। जिसका सरंक्षण अपनी जिम्मेदारी सौंपी जाती है, जो संपत्ति के बंटवारे में निहित अधिकार में अलग-अलग हिस्सों में यह क्रम पीढ़ी दर पीढ़ी अनवरत चलता ही रहता है।

आधुनिकता की भागमभाग दौड़ती जिंदगी में घटनाओं का दौर चलता ही रहता है, आये दिन कुछ न कुछ हर क्षण आश्चर्यजनक घटनाओं से साक्षात्कार होता ही रहता है, हालांकि जीवन की सच्चाई कुछ और ही होती है।

इस कथा संग्रह 'आशियाना' में जीवन के आसपास मौजूद घटनाओं को संग्रहित कर शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पूर्वजों के आशीर्वाद स्वरूप प्रेरणा लेकर ईश्वर की इबादत का हौसला लिये हुए यह मेरा दूसरा प्रयास 'आशियाना' कथा

संग्रह प्रस्तुत किया गया है। अथाह सागर में डुबकी लगाते हुए सतत प्रतीक्षा में प्रयासरत।

शशिकला व्यास

भोपाल

दादाजी का नयनतारा

बिट्टू ने सोचा चलो आज कुछ हसीन पल दादाजी के साथ बिताते हैं, बीते हुए उन अतीत के पन्नों को फिर से दोहराते हुए कुछ सुनी अनसुनी सी बातों ही बातों में बहस छिड़ गई। दादाजी ने कहा - बिट्टू अब तो तुम बड़े हो गए हो, आगे भविष्य में क्या बनने का इरादा है, जल्दी से कुछ ऐसा काम करो जिससे मुझे गर्व महसूस हो। अब पापा के बाद तुम्हारी जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसे पूरा करके दिखलाना है। ढलती उम्र का तकादा है, नजरें कमजोर हो गई है, आँखों से कुछ भी दिखाई नहीं देता है। एक आँख में मोतियाबिंद दूसरी आँख में ग्लूकोमा के कारण बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता है।

इस बुढ़ापे में अंधे की लाठी बन जाओ, शरीर भी कमजोर हो चुका है, न जानें कब क्या हो जाए, कुछ कहा भी नहीं जा सकता है। कोई भरोसा नहीं है, इस जीवन का तुम्हें बड़ा अफसर बनते देख बेहद खुशी महसूस करते हुए मन को तसल्ली देकर सुकून पाना चाहता हूँ और उन हसीन पलों को आँखों से न सही कानों से सुनकर निश्चिन्त होना चाहता हूँ।

इस पर पोते ने तपाक से बोला - दादाजी चिंता क्यों करते हो मैं कुछ बनकर दिखलाऊँगा, अपने सपनों को हकीकत में मंजिल तक पहुँचने में थोड़ा सा वक्त अभी बाकी है, यही एक अटल विश्वास लिए दृढ़ संकल्प शक्ति आशा की किरणें, उम्मीदों का दामन थाम कर खड़ा हुआ हूँ, तब सारी दुनिया मुझ पर गर्व महसूस करेंगी और आपके आशीर्वाद व दुआओं का असर भी अभी बाकी है।

एक दिन आपका आशीष वचनों की मुरादें पूरी होगी और आप मेरे सपनों को पूरा होते देख, आपके हाथों द्वारा सिर पर आशीर्वाद भरा हाथ रख ह्रदय से गले लगावोगे उच्च पदों की कुर्सी पर बैठकर अफसर बेटा कहलाऊँगा। दादाजी ने कहा -जल्दी से अफसर बन जाओ इन नैनो से बात न हो पायेगी, लेकिन कानों से ही सुनकर अब भवसागर तर जाऊँगा। ये बातें सुनकर पोते की आँखे भर आईं नैन मूंदकर भीगी पलकों से चुपके से माँ के पास आकर बोला - माँ क्या दादाजी के आँखों का कुछ किया जा सकता है। उनके लिए नई आँखों की व्यवस्था कर उनके नैनो की रौशनी वापस ला सकते हैं, ताकि मुझे अफसर बनते देख दादाजी बहुत ही खुश होंगे, नई दृष्टि से उजाले की ओर किरणों को वापस ले आते हैं।

माँ ने भी भीगी पलकों से बेटे को गले लगाते हुए सिर पर हाथ फेर सहलाते हुए बोली - बेटा तुम बड़े महान हो, हम सबका अभिमान हो, खानदान का चिराग हो, आने वाली पीढ़ियों की नई पहचान हो। दामन फैलाकर ईश्वर से यही फरियाद करती हूँ, कि तुम्हारे सपनो की ख्वाहिशें पूर्ण हो, सफलता तुम्हारे कदम चूमे, तुम मेरे प्यारे बेटे बड़े महान हो। "दादाजी का नयनतारा" बनकर सुखद भविष्य की स्वपन लोक में चिरकाल तक आने वाली पीढ़ियों की तुम अदभुत मिसाल हो

साथी हाथ बढ़ाना

नेहा अपने पति के साथ रोज सुबह सबेरे टहलने जाती थी, आज उन्होंने सोचा कुछ लंबी दूरी तय कर टहलते है, लेकिन कुछ दूर चलने के बाद सामने ही सड़क में एक बड़ा ब्रेकर आ गया। जो चलते समय दिखाई नहीं दिया और नेहा का संतुलन बिगड़ गया गिरते समय दोनों हाथों से अपने आपको संभालते हुए बच गई थी, लेकिन दोनों हाथ की कलाईयों में शरीर का पूरा सम्हालते हुए भार हो जाने से दर्द होने लगा।

घर आते ही हाथ की कलाईयों और दूसरे हाथ की कोहनी पर सूजन आ गया तुरन्त डॉक्टर के पास गई तो, पर पता चला कि दोनों हाथों में हल्का सा फ्रेक्चर हो गया है और प्लास्टर चढ़ा दिया गया था। नेहा अब घर के कार्यों खुद के कामों को करने के लिए असमर्थ हो गई, मन ही मन सोचने लगी काश! आज सैर पर टहलने नहीं जाती तो मेरे हाथ अभी ठीक रहते और घर के सभी कार्य अपने इन्हीं हाथो से ही करती। नेहा आंगन बाड़ी की सचिव है और घर के अलावा बहुत से कार्यों की ज़िम्मेदारी भी सौपी गई है, लेकिन अब कुछ दिनों के लिए सभी कार्य निरस्त कर दिये थे।

नेहा के बेटे शहर में पढ़ाई कर रहे थे, जैसे ही माँ के बारे में सुना तुरन्त ही मिलने चले आये लेकिन माँ की देखभाल के अलावा घर के सारे कार्यों को एक बेटी ही अच्छी तरह से सम्हाल सकती है, बेटी न होने का एहसास आज महसूस हो रहा था। लेकिन जब ईश्वर कष्ट देता है, तो उसका निवारण हेतु भी रास्ता निकालता है। नेहा के घर में किराये से रहने वाली महिला ने भरपूर सहयोग दिया और माँ दुर्गा की असीम कृपा से एक कन्या दिव्या ने सहारा के रूप में घर के सारे काम को सम्हालती थी।

नेहा के पति राजकुमार ने भी इन कठिन परिस्थतियों में काफी सहयोग किया। घर के सभी सदस्यों ने मिलकर पूरी घर की जिम्मेदारी सम्हाल ली जैसे-तैसे एक महिने बाद हाथों का प्लास्टर खुल गया था। लेकिन अभी भी सावधानी बरतने की जरूरत थी, फीजियो थेरैपी से हाथ कुछ हद तक ठीक होने लगा था। धीरे -धीरे सारी स्थिति अब सामान्य सी होने लगी, लेकिन उन दिनों की याद करने से मन में एक सिहरन सी हो जाती, अब कहीं भी जाती तो थोड़ी सी सावधानी रखती है।

दोनों हाथों के बिना कुछ भी कार्य करना असंभव हो जाता है,
खुद को सहारे के बिना असहाय महसूस होने लगता है, लेकिन जीवन साथी, बच्चों व परिवार जनों, पड़ोसियों का साथ एवं हाथ बटाने से ही कठिन परिस्थितियों में भी जीवन आसानी से खुशियों भरा व्यतीत हो जाता है, हाथ बटाने से अपार शक्ति मिलती है, प्रेम विश्वास भी बना रहता है। साथी हाथ बढ़ाना एक अकेला थक जायेगा मिलकर बोझ उठाना।

विदाई समारोह

शिखा विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर की अंतिम वर्ष छात्रा थी, उस दिन विदाई समारोह का आयोजन था। इस कार्यक्रम के लिए सभी छात्रों को निमंत्रण दिया गया था। शिखा साइकिल से ही कॉलेज जाया करती थी। शिखा ने विदाई समारोह के लिए बढ़िया नया सलवार सूट सिलवाया था।

विदाई समारोह के दिन अपने नये सलवार सूट को पहनकर साइकिल से कॉलेज जाने के लिए चल पड़ी, लेकिन बीच रास्ते में कुछ दूरी पर ही मोड़ आ गया, वहाँ पर दूसरी तरफ से नोसिखिया कार चलाने वाला शिखा की साइकिल से आकर टकरा गया। कार से टकराने के बाद शिखा साइकिल सहित गिर पड़ी, खुद को सम्हालते हुए जब देखा, तो घुटने में चोट लग गई, खून बह रहा है और सूट घुटने के पास से फट गया है। शिखा ने कार चालक को कोसते हुए रोने लगी कार चालक ने भी लड़की की स्थिति देखकर कार को किनारे लगाकर माफी मांगी और कहा मेरा घर पास में ही है। चलकर प्राथमिक उपचार करा लेते हैं, लेकिन शिखा मना करने लगी कुछ देर बाद अपनी हालत देखकर हाँ कह दिया था।

कार चालक के घर पहुँचकर वही डॉक्टर बुलाकर मलहम पट्टी बांध दिया और कुछ दवाईयाँ भी खाने के लिए दी, कार चालक के घर वालों को सारी बातें बतलाई, तो उन्होंने भी हाथ जोड़कर माफी मांगी और कहने लगे कि तुम हमारी बेटी की तरह से हो। किसी भी प्रकार का सहयोग जो हमसे बनेगा हम जरूर करेंगे। ईलाज के लिए, नये सलवार सूट के लिए और भी जितने रूपये - पैसों की जरूरत है रख लो। शिखा के हाथों में नोटों की गड्डी थमाते हुए कह रहे थे।

बेटे ने नई कार खरीदी थी, उसे ही चलाना सीखा रहा था। इतेफाक से ही ये हादसा हो गया है, हमारे बेटे को माफ़ कर दो काफी मिन्नतें करने के बाद शिखा ने उनके बेटे को माफ़ कर दिया और अब अपने घर जाने के लिए तैयार हुई तो परिवार के लोग कहने लगे कि हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं। शिखा के साथ कार चालक के परिवार वाले भी घर तक उसी कार में छोड़ने के लिए गये। शिखा के घर पहुँचते ही माँ घबरा गई। मेरी बेटी को क्या हो गया, ये तो साइकिल से कॉलेज गई थी और कार में अनजान व्यक्ति के साथ घर वापस आ रही है। शिखा को देखते ही माँ ने पूछा क्या हुआ? बेटी ने कहा - कार से टकराने में जरा सी चोट लग गई थी, इस पर शिखा की माँ उस लड़के पर आग बबूला हो गई और कहने लगी, पता नहीं आजकल के लड़के नशे में धूत गाड़ी चलाते हैं। हवा में गाड़ी घुमाते है और न जानें क्या क्या बोलने लगी थी।

थोड़ी देर में सारी बातें विस्तार से बतलाई गई तो शिखा की माँ कुछ शांत हो गई थी। कार चालक उस लड़के एवं माता पिता ने भी उस घटना पर अफसोस जताया और कुछ रूपये हरजाना के तौर पर देना चाहते थे, उन्होंने कहा - हमारी कोई बेटी नहीं है, आज से हम शिखा को बेटी के रूप में स्वीकार करते हैं और जब भी कोई सहयोग की जरूरत हो हमे अपना समझ कर बेझिझक बताइयेगा। कार चालक का परिवार बहुत बड़े व्यवसायी थे। उनका बड़ा कारोबार था, लेकिन उनकी कोई बेटी नहीं थी, बेटी की चाह में कई जगह मन्नते की थी सिर्फ एकलौता बेटा ही था। शिखा को पैर में लगी चोट

धीरे-धीरे ठीक होने लगी थी। उस दिन तो वह विदाई समारोह में कॉलेज नहीं जा सकी थी। लेकिन अब जब भी कॉलेज के लिए उसी रास्ते से गुजरती तो वह परिवार अपनी बेटी की तरह से ही सम्मान देते दुनिया में बहुत ही कम लोग होते हैं जिन्हें यादों में स्मरणीय रखा जा सकता है।

याद आ गया वो बीते पलों का जमाना।
गम का बहाना वो खुशियों का खजाना।।
कल, आज और गुजरे पलों का फसाना।
फर्क है इतना कि रूठे हुए को फिर से मनाना।

स्वर्ण पदक

हर माता-पिता की ख्वाहिश होती है, कि उनका बच्चा पढाई-लिखाई हर क्षेत्र में अव्वल हो, सम्मान स्वर्ण रजत पदक हासिल हो परन्तु कभी असली हकदार उस पदक से वंचित रह जाता है। ऐसी ही प्रिया का सफर प्री नर्सरी से शुरू होता है, वह हायर सेकंडरी स्कूल तक हमेशा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होती रही है। स्कूल के हर कार्यक्रमों, क्षेत्रों में बढ़ चढ़कर हिस्सा भी लेती रही थी।

हर साल आल राउंडर का पुरस्कार ले जाती थी। अब प्रिया कॉलेज में पढ़ाई करते हुए भी प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा में टॉपर रही।

फिर कुछ दिनों बाद कॉलेज के अंदर शिक्षक, छात्राओं के कंधे पर राजनीतिक पैतरा अपनाते रहते हैं, प्रिया भी इससे प्रभावित हुई कुछ नजरों में खटकने लगी थी।

ईर्ष्या व द्वेष की वजह से अपनी स्थिति से पिछड़ गई थी। प्रिया के साथ कॉलेज में पढ़ने वाली एक शिक्षक की लड़की भी पढ़ाई करती थी। दरअसल कॉलेज में प्रैक्टिकल विषय में कम अंक लेकिन सैद्धान्तिक विषय में अच्छे अंक मिलते रहे। दूसरी ओर एक छात्र भी हताश होकर आगे बढ़ने की होड़ में नम्बर कम मिलने से अवसाद की स्थिति में आने के कारण प्रिया ने उस छात्र की मदद की। प्रिया ने इस स्थिति में दूसरे विद्यार्थी की मदद करते हुए अपनी स्थिति को कुछ नीचे की लाइन में कर लिया था।

अपनी महत्वकांक्षा को दबा लिया और स्वर्ण पदक से कांस्य पदक पर उतर कर आ गई थी। ऐसा कहा भी गया है "जहाँ चाह है वहाँ राह है" दूसरों के लिए किया गया उपकार एक न एक दिन सुखद परिणाम लेकर आता है। प्रिया ने उपरोक्त त्याग बलिदान देकर अपनी सच्ची प्रतिभा को पहचान दिलाकर नई दिशाओं की ओर मुड़कर नई उड़ान भर ली है।

उपरोक्त त्याग व बलिदान से छुपी हुई प्रतिभा को ऊँचे मुकाम तक पहुँचा दिया था। प्रिया आज हायर शिक्षा के लिए विदेश में महान वैज्ञानिको एवं तकनीकीविदों के साथ मानवीय कल्याण हेतु अनुसंधान में संलग्न है और विश्व के कल्याण हेतु लक्ष्य को लिए हुए कार्यरत अपने देश का नाम रोशन कर रही है।

सुख दुःख जीवन के पहलू

जिस तरह से सिक्के के दो रुप होते हैं, उसी तरह से जीवन में भी दो पहलू होते हैं, कभी सुख, कभी दुःख ये दोनों जीवन में आते-जाते रहते हैं, यह प्रकृति का नियम चक्र चलता ही रहता है। वर्तमान जीवन में संचित कर्म या पूर्व जन्म के कर्मों का लेखा-जोखा भाग्य में आते हैं। जिसके कारण कभी सुख, कभी दुःख के रूप में मिलते हैं, जो लाख कोशिशों के बाद भी टाला नहीं जा सकता है।

ईश्वर शक्ति के चमत्कार से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं, कोई डिगा नहीं सकता है। गौरव के पिताजी अस्थमा के मरीज थे। ठंडी के मौसम में उन्हें कुछ ज्यादा तकलीफ होती थी। कुछ दिनों से गले में दर्द होने के कारण इंडोस्कोपी टेस्ट करवाया गया, जिसके कारण से खाना-पीना सब बन्द हो गया और शरीर कमजोर होने लगा, कुछ दिनों तक अर्धचेतन स्थिति में ही रहे उनकी हालत बिगड़ने लगी थी उनकी दयनीय हालत देखते ही नहीं बनती थी। घर के सभी रिश्तेदार मिलने आते तो आँखे खोल देखते फिर सो जाते थे। कुछ दिनों तक यही हाल रहा फिर ईश्वर की आराधना परिवार वालों की सेवाभाव से कुछ सेहत में सुधार आने लगा।

धीरे-धीरे समय चक्र बदलने लगा, ईश्वर के चमत्कारिक प्रभाव एवं स्नेहिल स्पर्श से गौरव के पिताजी कोमा से बाहर आने लगे थे। गौरव की माँ ने एक दिन पिताजी को उठा कर बैठाया, उनकी इच्छा न होने पर भी जबरदस्ती अदरक वाली गर्म चाय पिला दिया। एक संकल्प और ईश्वर के करिश्मा से अदरक वाली चाय ने कमाल कर दिया। पेट में जाते से ही कुछ असर पड़ा और भूख जागृत हो गई, कुछ समय के बाद तरल पदार्थों का सेवन करने लगे थे, धीरे धीरे स्थिति सामान्य हो गई अब पुनः शरीर स्वस्थ हो गया था।

गौरव के पिताजी अब मनपसन्द खाने की फ़रमाइश करने लगे थे और घर में छाई उदासी का माहौल खुशियों में तब्दील हो गया था।

प्रकृति का नियम परिवर्तन है जिस तरह मौसम भी परिवर्तित होता है, उसी तरह जीवन में भी कुछ अनचाहे घटनाओं के साथ जीवन में कभी खुशियाँ मिलती है और कभी न चाहते हुए भी गमों का सामना करना पड़ता है ।

सादगी में ही सुंदरता

करवा चौथ के दिन महिलाएँ अपने पति परमेश्वर के लिए घर का कार्य करते हुए भूखे प्यासे निर्जला व्रत रखती हैं। सोलह श्रृंगार करके विभिन्न परिधानों से सजते हुए दुल्हन की तरह से तैयार होकर हाथों में मेहँदी लगाकर सुहाग का जोड़ा पहनकर पूजन की थाल लिए हुए चाँद के दर्शन के लिए बेसब्री से इतंजार करती है। चाँद निकलने पर पूजन अर्ध्य देते हुए प्रियतम का चेहरा चाँद में निहारती है और पति के हाथों से जल पीकर अपना व्रत खोलती है।

वैसे तो हरेक नारी को साज श्रृंगार का बहुत शौक होता है, खासकर महिलाओं को जब भी व्रत, त्यौहारों, शादी के कार्यक्रमों में सजना सँवरना बेहद पसंद होता है। लेकिन जरूरी नहीं कि सभी को सजना सँवरना अच्छा लगता हो किसी को सादगी में ही रहना पसंद आता है।

प्रियंका को भी ज्यादा सजना सँवरना पसंद नहीं था, पतिदेव ओम प्रकाश को भी सादगी ही पसंद थी। शादी के बीस वर्ष तक करवा चौथ के दिन सोलह श्रृंगार कर पूजन की थाली लिए नील गगन में चाँद को निहारती रही परन्तु इस बार अचानक तबीयत खराब होने से शारीरिक कमजोरी महसूस हो रही थी। पेट का ऑपरेशन होने की वजह साड़ी पहनना जरा मुश्किल था और तैयार भी नहीं हो पाई थी।

सलवार सूट पहनकर ही व्रत पूजन करके चाँद के दर्शन किया था। इस विशेष करवा चौथ व्रत में प्रियंका की दोनों बिटियाँ प्रिया, अंजली ने भी मिलकर सहयोग दिया और पतिदेव ओम प्रकाश ने भी काफी मदद की थी।

प्रियंका को वह करवा चौथ का दिन आज भी जहन में स्मरणीय है, क्योंकि बच्चों ने, पतिदेव ने, व्रत रखने में काफी योगदान दिया और उस वक्त उन्होंने जो कहा था, कि व्रत-त्यौहार तो आते ही रहेंगे। अपनी सेहत से बढ़कर कुछ भी नहीं है। ये जरूरी नहीं है, कि एक नारी सज-धज कर श्रृंगार करके ही सुँदर दिखती है। मन में सच्ची श्रद्धा भावना प्रगट होनी चाहिए। वो करवा चौथ सही मायने में व्रत की महत्ता को दर्शाता है और इंसान के अंदर की सुंदरता को प्रगट करता है, बाकी सभी चीजें व्यर्थ ही है। सादगी में ही सुंदरता छिपी रहती है। जीवन संगिनी क्या हुआ गर साज श्रृंगार नहीं किया। चाँद को निहारने चली थी प्रियंका, प्रियतम ने कहा! मैं तो तेरा चाँद हूँ तुम मेरी चाँदनी हो। खुद को चाँद सा शीतल बना दो और नई पीढ़ियों को सादगी में ही सुंदरता का पाठ पढ़ा दो।

देने का असीम सुख

एक सूफी संत था और उनका शिष्य रोज सुबह बैठकर कुछ देर तक ज्ञान की चर्चा करते थे, गर्मी का मौसम में आश्रम में भी भीषण गर्मी पड़ रही थी, तो शिष्य ने सोचा क्यों न गुरूजी के लिए एक कूलर की व्यवस्था की जाये। शिष्य बाजार और सूफी संत के लिए कूलर खरीदने लगा, परन्तु उसे समझ नहीं आ रहा था, कि कौन से रंग का कूलर खरीदे, फिर दिमाग पर याद आया, कि सूफी संत को हरे रंग का कूलर पसंद आयेगा। कूलर खरीदकर सूफी संत को उपहार स्वरूप भेंट किया। लेकिन कूलर उपहार भेंट लेने से मना कर दिया, उन्होंने कहा - ये क्या उठाकर ले आये हो इसका हरा रंग भी अजीब सा है। हम साधना, तप करते हैं, तो वैसे भी भौतिक सुख सुविधाओं की जरूरत नहीं पड़ती है।

इसे वापस ले जाओ शिष्य ने बोला ये आपका पसंदीदा रंग है, हरे रंग की प्रधानता है, कृपया आप इसे स्वीकार कीजिए, बहुत अनुरोध करने पर संत ने कहा - अच्छा चलो ठीक है, लेकिन एक काम करो पहले कूलर का कोई दूसरा रंग बदलकर ले आओ और ऐसी जगह पर पहुँचा कर आओ जहाँ का मैं पता देता हूँ, उस जगह पर कूलर पहुँचाने की व्यवस्था कर दो।

शिष्य ने पहले उस कूलर को बदल कर दूसरे पीले रंग का कूलर खरीदकर संत के बताये गये स्थान पर भेजने की व्यवस्था कर दी गई थी। जहाँ पर भेजना चाहते थे। वहाँ जाकर शिष्य देखता है, कि अत्यंत गरीब परिवार की बेटी की शादी हो रही थी, शिष्य ने बाहर से ही आवाज लगाई और घर के सदस्यों से कहा- सूफी संत ने यह कूलर आपकी बेटी की शादी में उपहार स्वरूप प्रदान किया है, वह गरीब परिवार इस खुशी के मौके पर ये अनमोल तोहफा लेकर धन्यवाद देते हुए, उस गरीब परिवार की आँखों में ख़ुशी के आँसू आ गये उन भावुक क्षणों को देख शिष्य अपने को कृतार्थ महसूस किया।

खुशियों का कोई मोल नहीं ये अनमोल धरोहर है और जितनी खुशियाँ उपहार स्वरूप बाटेंगे, उतनी ही अधिक मात्रा में दुगुना बढ़ते ही जायेगा। किसी चीज की तुलना न करके जीवन में कभी ऐसा महसूस होता है, शिष्य ने यह अद्भुत नजारा अपनी आँखों से देखकर सूफी संत को बतलाया था। दूसरों की खुशियों से बढ़कर दुनिया में कोई कुछ भी नहीं है, इस अमूल्य योगदान से सकारात्मक ऊर्जा भी मिलती है और दूसरों के खिले हुए चेहरों से अपने अंदर भी ख़ुशी महसूस होती है और आगे चलकर दुगुना आनंद प्राप्त होता है।

रूहानी मदद

शिवपुर शहर में तालाब के किनारे एक कुटिया थी। जिसमें फकीर बाबा रहते थे। उस तालाब के किनारे रँग बिरंगे फूलों की बगीचा भी लगा हुआ था, तालाब के किनारे बहुत से पशु पक्षी विहार करने आते थे और आसपास मौजूद बेहद खूबसूरत अदभुत नजारा शांत वातावरण था। प्राकृतिक शुद्ध वातावरण के कारण लोगों का आना-जाना लगे ही रहता था।

मोहन अक्सर फकीर बाबा के दर्शन करने जाया करता लेकिन कुछ कारणवश बहुत दिनों से बाबा के पास नहीं गया था। एक दिन अचानक रास्ते में विचार आया कि फकीर बाबा के दर्शन कर आता हूँ, फिर मन में सोचा खाली हाथ कैसे जाऊँ? वहीं जाते समय रास्ते से ताजे संतरे लिए और फकीर बाबा की कुटिया में पहुँच कर बाबा के दर्शन करके उन्हें संतरे भेंट किये, लेकिन संतरे को देखकर बाबा ने कहा-ये कैसे संतरे लाये हो, ये संतरे जहाँ से लाये हो वही पर वापस करके आओ और मैं जहाँ से कहता हूँ, वहाँ से संतरे लेकर आओ कुटिया के पास ही शनि मंदिर है, वहाँ पर फुटपाथ में एक बुजुर्ग संतरे बेच रहा है, वहाँ से संतरे खरीद कर लाओ।

मोहन ने बाबा के कहे अनुसार अपने लाये हुए संतरे को वापस करके बाबा के बताये गये स्थान पर गया वहाँ उसने देखा कि मैले फ़टे वस्त्र पहने हुए बूढ़ा सा व्यक्ति संतरे बेच रहा था। मोहन ने संतरे खरीदे और फकीर के पास पहुँचा, तो बाबा बड़े खुश हुए और कहने लगे वाह बहुत बढ़िया संतरे है, चलो हम दोनों मिलकर इस संतरे को खाते हैं। संतरे खाते ही फकीर ने कहा- बहुत ही मीठे संतरे है। मोहन फकीर का आशीर्वाद प्राप्त कर घर वापस लौट आया और वह सारी घटनाओं को गहराई से सोचने लगा?

आखिर ऐसी क्या वजह थी, कि मेरे द्वारा लाये गये ताजे फलों को वापस लौटा कर उस बूढ़े व्यक्ति के पास से लाये गए संतरे फकीर बाबा को बेहद पसंद आये इसके पीछे जरूर कोई रहस्य छिपा हुआ है। शायद फकीर बाबा जी त्रिकालदर्शी होंगे अपनी ध्यान साधना द्वारा उस बूढ़े व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को जानकर जरूरत मंद की तकलीफ दूर करने के लिये रूहानी मदद करने का इशारा है और फकीर ने उस व्यक्ति की गुहार सुनकर मदद की यही रूहानी मदद ईश्वर की इबादत है।

वो उड़ती हुई पतंग

मकर संक्रांति पर्व में पतंग उड़ाने का रिवाज है। इंद्रधनुषी घटाओ में लहराती, बल खाती हुई पतंगों की उड़ान देखते ही बनती है। मानो एक दूसरे से कह रहे हो किसमें कितना दम है, पतंग को आसमान में ऊँचाइयों तक ले जाने की होड़ सी लगी रहती है। साहिल को भी पतंग उड़ाने का बेहद शौक था। लेकिन घर वाले पतंग उड़ाने की इजाजत नहीं देते थे। उन्हें डर लगता था, कि कहीं छत पर पतंग उड़ाते हुए इधर-उधर पैर रखते हुए कहीं गिर न जाये चोट न लग जाये ?

परन्तु जब मन में किसी चीज की लगन लगी हो, ख्वाहिशे उमंगों भरा हुआ, हो तो कोई भी कार्य अछूता नहीं रहता है। किसी न किसी तरह से उसे पूरा करने के लिए बार-बार मन वही दौड़ता है। साहिल चुपके से रंगीन कागज, आटे की लुगदी, बांस की छोटी लकड़ियाँ-डंडियाँ, कांच के टुकड़े कर उसे कूटकर उससे पतंग की डोरी मांझा को तेज करता था।

सारी चीजों को एकत्र कर खुद ही चुपके - चुपके पतंग बनाने की तैयारी में जुट जाता था। अपनी धुन में पक्का हो फिर कुछ नहीं सूझता था। अतंतः पतंग बनाकर उसे ऐसी जगह पर छिपा देता जहाँ किसी की नजर ही न पड़े और घरवालों की डांट भी न पड़े मकर संक्रांति के दिन छत की मुंडेर पर पतंग उड़ाने की कोशिश में लगे रहता था। लेकिन पतंग की डोरी से खींच नहीं पाता कभी पतंग पकड़ना कभी डोरी को खींचता अकेले की बस की बात नहीं थी फिर चुपके से चकरी पकड़ने के लिए छोटी बहन रीमा को बुलाता। खुले आकाश में स्वछंद हवाओं में पतंग उड़ाया। छोटी बहन रीमा ने पतंग की चकरी की डोरी पकड़कर ढील देती इधर उधर करते हुए खींचते हुए पतंग आसमान में लहराने लगी। हवाओं से बातें करने लगी थी। आखिर साहिल की मेहनत रंग लाई उमंगों की ख्वाहिशों की उड़ान खुद की बनाई पतंग पर आजमाई थी। अब पतंग आसमान में उड़ने लगी थी।

इस खुशी को व्यक्त करने के लिए परिवार वालों को भी आवाज लगाकर बुलाया वो उड़ती हुई पतंग नील गगन में लहराती हुई उड़ते ही जा रही थी। आज साहिल की मेहनत रंग लाई, ये बेहतरीन नजारा देख सभी ख़ुशी से झूमने लगे इजहार करते हुए बहुत खुश हुए असली खुशियाँ परिवार के साथ ही बाँटने से ही मिलती है।

आकाश में देखते हुए आज साहिल का मन कह रहा था, वो देखो उड़ चली मेरे ख्वाहिशों की पतंग उड़ते हुए दूर नील गगन में साहिल का मन आसमान की तरफ देख पतंग उड़ाने की ख़ुशी जाहिर कर रहा है, परंतु ख़ुशी ज्यादा देर तक नहीं टिकी उसी समय दूसरी पतंग ने आकर साहिल की पतंग को काटकर चली गईं। बादलों में उड़ती हुई पतंग कहीं सुनसान विरान जंगलों में न जाने कहाँ गुम हो गई। देखते ही देखते पतंग से

डोरी अलग हो गई और अकेली टूटी हुई पतंग की डोरी थामे छोटी बहन स्तब्ध सी रह गई ये क्या हुआ।

पतंग न जाने कहाँ ओझल हो विलुप्त हो गई थी। काट न सके कभी कोई (आत्मारुपी) पतंग को, जो कट भी गई तो मोह माया में उलझ गई उमंगों व तमन्नाओं की उड़ान पतंग बनकर लंबी डोरी बांधकर उड़ाई थी। पर ऊपर वाले ने भी क्या किस्मत बनाई छोटी डोरी संग लेकर उड़ चली गई।

कर्मचारी का स्वांग

रघुवीर प्रसाद सिंह मल्टी नेशनल कंपनी के मुख्य कार्यकारी/ अधिकारी थे कंपनी में चौबीस घंटे काम चलते ही रहता था। कर्मचारी और अधिकारी को ओवरटाईम काम करने का अलग से वेतन दिया जाता था। कंपनी में एक दिन ऑफिस के समय कुछ सुरक्षा गार्ड आये और उन्होंने खबर दी क़ि एक कर्मचारी जिसका नाम सूरज कुमार है, वो रेल की पटरी पर बैठ गया है और कह रहा है, क़ि वह आत्महत्या करने जा रहा है।

आप आदेश दे हम क्या कर सकते हैं। रघुवीर प्रसाद सिंह को कुछ लोगों से ज्ञात हो गया था, कि सूरज कुमार को ओवरटाइम का वेतन पैंडिंग अधूरा पड़ा है और रघुवीर प्रसाद सिंह का जो आरोप बिना ओवरटाइम ड्यूटी लगाई जाने का है, जो जांच के अधीन है, जब तक जांच में सही नतीजा नहीं पाया जाता है, तब तक ओवरटाइम का वेतन नहीं दिया जा सकता है। रघुवीर सिंह ने कंपनी के सुरक्षा गार्ड से पूछा कि आप लोग उसे पकड़ कर क्यों नहीं लाये इस जवाब पर गार्ड ने बतलाया कि सूरज कुमार को पकड़ने की बहुत कोशिश की गई, लेकिन वह पटरी से पत्थर उठा उठाकर हमारी तरफ फेंक रहा है और रेल्वे पटरी से हट भी नहीं रहा है।

रघुवीर सिंह ने सुरक्षा कर्मी से कहा - जहाँ पर सूरज कुमार पटरी पर बैठा हुआ है। वहाँ पर लगभग आधा किलोमीटर दूरी पर लाल रंग का कपड़ा लेकर खड़े हो जाए ताकि रेलगाड़ी आ रही हो तो उसे रोका जा सके और कुछ सुरक्षा गार्ड अपने साथ मोटा सा टिन का टुकड़ा लेकर जाओ और अपने आपको बचाते हुए उसे पकड़ लो। इसी बीच कंपनी के अधिकारी को किसी ने सूचना दी, कि उस कर्मचारी का कुछ पैसा उधारी है और कर्ज चुकाने के लिए किसी ने मशवरा दिया था, कि अगर वह रेल्वे पटरी में आत्महत्या का स्वांग रचेगा तो बड़े अफसर साहेब उसे ओवरटाइम का पूरा वेतन दे देंगे। कुछ देर बाद कंपनी के सुरक्षा गार्ड ने मुख्य अधिकारी रघुवीर सिंह के बताये आदेशानुसार सूरज कुमार को पकड़ कर ले आये। उसके बाद उन्होंने सुरक्षा गार्ड से कहा - अब उसकी जमकर पिटाई करो और छोड़ दो उन्होंने वैसा ही किया उसकी खूब पिटाई की और कुछ देर बाद उसे छोड़ दिया था।

दूसरे दिन सूरज कुमार की पत्नी राजनेता के साथ शिकायत लेकर पहुँची वहाँ पर कंपनी के मुख्य अधिकारी मौजूद थे। सूरज कुमार की पत्नी ने कहा - सुरक्षा गार्ड ने मेरे पति की खूब पिटाई की और उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया है। उन्हें कड़ी सजा मिलनी चाहिए। सारी बातें सुनकर रघुवीर सिंह ने सूरज कुमार की सारी सच्चाई बयान कर विस्तार पूर्वक पूरी बातें बतलाई गई। सूरज कुमार कैसे किसी व्यक्ति के बहकावे में आकर एक गलत कदम उठा रहा था। प्रशासन को धोखा देकर अपने ओवरटाइम का वेतन निकलवाने के चक्कर में यह स्वांग रचा था।

कंपनी के अधिकारी रघुवीर सिंह ने कहा! कि अब यह पूरा वाकया हम क्यों न पुलिस में दे देते हैं, वही फैसला सुनायेंगे। पुलिस के डर से सूरज कुमार ने अपनी गल्ती कबूल की और स्वांग रचने की सच्ची घटना बतला कर पत्नी और राजनेता के समक्ष सारी बातें प्रस्तुत कर बेहद लज्जित हो गया।

नमामि देवी नर्मदे

भारत देश में गंगा, यमुना, कावेरी, नर्मदा जैसी बहुत सी पवित्र नदियाँ बहती है, लेकिन विभिन्न जलों से परिपूर्ण जिसमें औषधि के गुण मौजूद है। इन पवित्र नदियों के जल पीने से लाभ मिलता है। इसमें एंटी ऑक्सीडेंट बैक्टीरिया के गुण होते हैं। इनमें से खास तौर पर पवित्र जल गंगा का गंगाजल एवं नर्मदा नदी का जल औषधि का काम करता है। मध्यप्रदेश के जिले नरसिंहगढ़ गाँव में रघु यादव नाम का युवा शारीरिक रूप से कमजोर था। उसे भूख ही नहीं लगती थी और हाथ पैरों में दर्द और कमजोरी महसूस होती थी। उनके परिवार वाले कई जगह बड़े शहरों में ईलाज करवाया था, लेकिन जब तक रघु यादव दवाइयाँ लेता था। तब तक उसके शरीर का दर्द ठीक रहता था। कुछ समय बाद फिर से हाथ पैरों में दर्द वैसा ही हो जाता था और खाना खाने की इच्छा बिल्कुल भी नहीं होती थी।

एक दिन रघु यादव नर्मदा नदी के किनारे सैर करने गया वहाँ पर गाँव की एक बुजुर्ग महिला से मुलाकात हुई उसने अपना सारा हालचाल सुनाया और बतलाया कि बहुत ईलाज करवाने के बाद भी उसे आराम नहीं मिल रहा है। डॉक्टर भी बीमारी को पकड़ नहीं पा रहे हैं। इस बात पर उस बुजुर्ग महिला ने बड़े आत्म विश्वास के साथ में कहा- आप बिल्कुल स्वस्थ हो जावोगे, बस एक काम करो मेरे पास कुछ नर्मदा जल है। इसे ले जाओ और सुबह - शाम दो चम्मच इसका सेवन करना तुम्हारी बीमारी ठीक हो जायेगी। वह बुजुर्ग महिला घर के अंदर से एक बॉटल में नर्मदा जल लाकर दिया, जिसे लेकर रघु घर चले आया और मन में सोचा कि चलो ये भी आजमा कर देख लेते हैं। दूसरे दिन से रोज सुबह शाम नर्मदा जल पीने लगा था, कुछ दिनों बाद सचमुच ही चमत्कार

होने लगा, उसे भूख लगने लगी। अब सभी चीजें अच्छी लगने लगी थी और रघु यादव की सेहत में आंशिक रूप से सुधार होने लगा था।

कुछ दिनों बाद रघु फिर से नर्मदा नदी के किनारे बुजुर्ग महिला के पास गया और उनको बतलाया आपके इस नर्मदा जल पीने से बहुत फायदा हुआ है। आज स्वस्थ महसूस कर रहा हूँ, इस नर्मदा जल में तो कमाल का जादू है, आप धन्य हैं जो मेरे लिए ईश्वर स्वरूप संजीवनी जल देकर मेरी बीमारी को ठीक कर दिया है, उस बुजुर्ग महिला का बार-बार धन्यवाद करते हुए जाने लगा, तो उस महिला ने बताया कि अब नर्मदा जल की मात्रा बढ़ाकर पीना शुरू कर दो इस चमत्कारी उपाय को जारी रखना। जिससे पूर्ण रूप से स्वस्थ तन्दरुस्त हो जावोगे।

जब भी कभी हम बीमार पड़ते हैं, तो विभिन्न तरह की औषधि लेते हैं, कभी न कभी कोई भी उपचार शरीर में कारगर सिद्ध हो जाये लेकिन यह समय स्थान के परिवर्तन से भी निर्भर करता है। कुछ बीमारी में कई डॉक्टर के इलाजों के बाद भी कुछ असर नहीं होता है। लेकिन कभी जरा सी कुछ बूंदें अमृत तुल्य नर्मदा जल पीने मात्र से ही उद्धार हो जाता है। धार्मिक अनुष्ठान एवं ईश्वर प्रदत्त चमत्कारी उपाय से भी व्यक्ति स्वस्थ आरोग्य हो जाता है।

दादी की लाडली

जीवन सफर में संवारते पलों के साथ जीवन साथी का बिछोह बहुत ही दुखदायी होता है। अचानक से ही दु:खद घटनाओं का सामना करना बेहद कठिन होता है। राधिका की दो बेटियों के बाद तीसरी बेटी सौम्या को जन्म देते ही समय चल बसी, अब नन्ही सी जान बिटिया को कैसे और कौन सम्हाले?

दोनों बेटियाँ भी अभी उम्र में छोटी थी, पिताजी मोहन के उपर बहुत बड़ी चुनौती खड़ी हो गई थी। कुछ सूझ नहीं रहा था, आखिर अब क्या करे? दादी माँ गाँव में रहती थी, उन्होंने कहा- मैं सब सम्हाल लूँगी चिंता मत करो- सौम्या की देखभाल की जिम्मेदारी दादी माँ ने अपने हाथों में ले लिया था। दादी माँ उस नवजात बच्ची सौम्या को गाय का दूध पिलाकर पालन पोषण कर बड़ा किया। देखते ही देखते वह बड़ी हो गई थी।

सौम्या भी दादी माँ के साथ रहकर घुल मिल गई थी सौम्या को कोई कुछ कह देता, तो दादी माँ को बहुत बुरा लगता था।

दादी माँ ने बड़े ही नाजो से पाला उसे कुछ भी परेशानी या कष्ट होता, तो खुद भी परेशान हो जाती। उदास हो जाती थी आखिर क्या करे बहुत सारी परेशानियों को झेलते हुए सौम्या को बड़ा किया था। समय बीतने पर सौम्या को शहर में रखते हुए शिक्षा दिलवाई ताकि गाँव में पली बढ़ी होने के कारण से सभी तौर तरीकों से वाकिफ हो सके।

राधिका की दोनों बेटियों की शादी हो चुकी थी। पिताजी भी गोलोक धाम चले गए और अब सौम्या भी सयानी हो चली थी। उसकी भी शादी एक अच्छे नौकरी पेशा में लगे हुए लड़के से शादी कर दी गई। दादी माँ सौम्या के ससुराल जाने के बाद फिर उदास अकेले सी रह गई थी कभी-कभी अपने पास बुला लेती थी। कुछ दिनों बाद सौम्या माँ बन गई, एक सुंदर सी बेटी पल्लवी को जन्म दिया। जिसकी देख-रेख भी दादी माँ ने बड़े लाड़ प्यार से किया समय गुजरते देर नहीं लगती अब दादी माँ काफी उम्र की हो जाने के कारण कमजोर होने लगी उनकी सेहत अच्छी नहीं थी, उन्हें सहारे की भी जरूरत थी।

अब सौम्या दादी माँ की सेवा करने लगी, दादी माँ को पेट में ट्यूमर हो गया इसका इलाज ऑपरेशन था। परंतु उन्होंने ईलाज नहीं करवाया डॉक्टर भी ज्यादा उम्र होने के कारण से भी खून बनने के चांस शरीर में नहीं रहते हैं।

दादी माँ वैसे भी ईश्वर पर विश्वास रखती थी और अपनी पोती के साथ यूँ ही दिन गुजार रही थी। शारीरिक कमजोरी के कारण दादी माँ कहीं पर गिर पड़ी और पैर में ज्यादा चोट लगने से हड्डी टूट गई जिसकी वजह से चलने फिरने में दिक्कत होने लगा और पैर में प्लास्टर चढ़ गया था। इन सभी परेशानियों के कारण खाना पीना भी कम हो गया। सौम्या दादी माँ की पूरी तरह से देखभाल करती थी और अपने परिवार को भी

बखूबी से सम्हालती थी अंततः दादी माँ का स्वर्गवास हो गया और सौम्या निसहाय निःस्तब्ध सी रह गई थी।

जीवन सफर में कुछ समय बाद सौम्या की दूसरी बेटी का जन्म हुआ जो हू ब हू दादी माँ की शक्ल ले कर आई थी। रंग, रूप, व्यवहार सभी चीजें समान रूप से दादी माँ की नकल भी उतारती थी। उसका नाम ख़ुशी रखा गया सौम्या की दूसरी बेटी ख़ुशी को साथ रहकर ऐसा लगता था, मानो फिर से दादी माँ ख़ुशी के रूप में वापस लौट आई हो।

होली का हुड़दंग

जीवन सतरंगी रंगों से भरपूर उल्लासित होते रहता है। होली का दिन रंगों के लिए बहुत ही खास तौर से महत्वपूर्ण है, रंगों का नाम सुनते ही इंद्रधनुषी सतरंगी बयार जहन में अलग-अलग रंगों का ख्याल आता है। होली मनाने का तरीका प्राचीन काल से जुड़ी चली आ रही परम्पराओं, मान्यताओं को ही महत्व दिया जाता है, पवित्र अग्नि में बुराइयों को खत्म कर मन में बसे अंहकार को निकाल सकारात्मक सोच को ग्रहण करने की सरल माध्यम बनाया गया है।

सुरेश जब छोटा सा था, तब वह आरंग गाँव में रहता था। वहाँ होली मनाने की विचित्र सी प्रथाएँ चली आ रही थी। सुरेश के पिताजी राजेन्द्र प्रसाद दुबे जी आरंग गाँव में प्रतिभाशाली विशिष्ट पहचान लिए बैंक में अधिकारी पद पर कार्यरत थे, उनके कर कमलों के द्वारा ही गाँव में होलिका दहन होता था। होलिका दहन के दिन शाम को कुछ बच्चों ने घर आकर राजेन्द्र जी को बुलाने आये थे, इस पर उन्होंने कहा - अभी मै कुछ ही देर में आता हूँ। जब तक सुरेश को घर की देहरी पर बैठाकर खाना खाने अंदर चले गए थे। सुरेश देहरी पर बैठकर इतंजार कर रहा था, कि कब होली जलेगी इतने में कुछ समय बाद गली मोहल्लों के बच्चों की टोली आई और घर के सामने एक मटका फोड़ दिया था। जिसमें नालियों का गंदा कूड़ा कचरा भरकर फेंक दिया और गली में कहीं जाकर छिप गए थे।

अब डरा सहमा सा सुरेश किवाड़ बंदकर अंदर चले आया, पिताजी ने पूछा क्यों? क्या हुआ? इस पर सुरेश ने सारी बातें पिताजी को बतलाई। होलिका दहन की तैयारी पूरी हो जाने के बाद राजेन्द्र जी को बुलाया गया तो उन्होंने पहले मना कर दिया, फिर कुछ देर ठहरकर उस स्थान पर गये और सारी बातें लोगों को बतलायी गई, उन्होंने कहा - पहले उन शरारती बच्चों को सामने लाया जाय। जिन्होंने मेरे घर के सामने गंदी चीजों को डालकर मटका फोड़कर भागे थे। बड़ी मुश्किलों से उन शरारती बच्चों के आने के बाद उन्हें प्रेम से समझाया गया, ताकि ये गंदी आदतों को परम्पराओं को छोड़ दें, इससे कोई फायदा नहीं है। बल्कि इस हरकतों से अपने आपको कितना गंदा महसूस करते होगे, इस पर कुछ बच्चों ने कहा - क्या करें यह पुरानी परंपरा प्रथाएँ चली आ रही है,

इसलिए हम भी खेल में मस्ती कर लेते हैं। राजेन्द्र जी ने सभी बच्चों को समझाते हुए होलिका दहन में एक नया संकल्प करवाया, कि आज के बाद इन गंदी हरकतों को अब नहीं करेंगे सिर्फ रंग गुलाल लगाकर, बड़े बुजुर्गों के पैर छूकर, आशीर्वाद लेकर, होलिका दहन मनायेंगे। इस तरह सभी ने उनकी बातों का अमल किया गया और उस दिन से आरंग गाँव में होली का त्यौहार बड़ी शालीनता पूर्वक मनाया जाने लगा था। इस तरह से पुरानी प्रथाओं को समाप्त कर नई परम्पराओं को शामिल कर लिया गया था।

कथाओं में उन बातों की ओर संकेत है, जहाँ बुराई पर अच्छाई की जीत सुनिश्चित है, वहाँ पर होली का पर्व सामाजिक उत्सवों के रूप में खुशियाँ जाहिर करना है। आपसी सहयोग, भेदभाव मिटाकर भाईचारे के साथ में त्यौहारों का निराला अंदाज इंद्रधनुषी रंगीन छटा निखारती है।

कुदरत का करिश्मा

श्वेता के घर के पास घना जंगल है, जहाँ प्राकृतिक नजारों के साथ बहुत से प्रकार के पेड़-पौधे लगे हुए हैं, श्वेता रोज सुबह वहाँ घूमने जाती और लौटते वक़्त कुछ पेड़ों से सुंदर पुष्प भगवान में चढ़ाने के लिए ले आती थी। एक दिन सुबह घूमते समय उसने देखा कि बहुत से पेड़ काट दिये गए हैं, उनमें से सुंदर फूलों के पेड़ को भी काट दिया गया हैं और सभी पेड़ बेजान से जमीन पर पड़े हुए हैं। श्वेता उन पेड़ों को देखकर रो पड़ी उनमें से एक पेड़ (अकौआ) याने श्वेतार्क का था।

जिनकी जड़ में गणेश जी की आकृति लिए स्वरूप प्रगट होते हैं, दूसरे दिन नहा धोकर शुद्ध मन से हाथ में पुष्प, रोली एवं चावल से पेड़ की जड़ की पूजन कर घर चलने का निमंत्रण दिया, जल चढ़ाकर गणेश जी का आह्वाहन किया तीसरे दिन फिर उस पेड़ की जड़ से खुदाई करने पुनः पूजन की सामग्री एवं बाल्टी में जल लेकर गई धीरे-धीरे जड़ की खुदाई करने पर गणेश जी का एक हाथ लंबा सूंड दिखने लगे जो सड़क के किनारे की तरफ था।

धीरे-धीरे अंदर तक खुदाई करते हुए उसे समुद्र मंथन की तरह से मथकर मुश्किल से बाहर निकाल लिया गया। सचमुच में कुदरत का करिश्मा रूपी गणपति बप्पा जी साक्षात् प्रगट हो गये थे। उसे घर लाकर शुद्ध जल से स्नान कराकर कुछ देर धूप में रखकर शाम को सिंदूर व तेल का लेप लगाने के बाद घर पर ही पूजन के स्थान में गणपति जी की स्थापना कर दीं गई। अब वही श्वेतार्क पेड़ की जड़ घर में सिद्धि विनायक गणपति जी के रूप में विराजमान होकर सद्बुद्धि देते हुए कृपा दृष्टि प्रदान कर रहे हैं।

आकाश का परिंदा

पृथ्वी में तीन तरह के जीव-जन्तु होते हैं, नभचर, स्थलचर, जलचर। नभचर में पक्षी, स्थलचर में मनुष्य पशु, जलचर में मछली, केकड़ा, कछुआ इत्यादि। पृथ्वी के तलों में सभी जीव जंतु में कौन सबसे ज्यादा बलशाली है। यह इस छोटी सी घटना के माध्यम से जाना जा सकता है - एक दिन आलोक अपनी बेटी को स्कूल के लिए बस स्टॉप तक छोड़ने गये और घर वापस लौट रहा था। तो देखा - सड़क के किनारे मैदान में पेड़ों पर स्टोर्क चिड़िया बैठी हुई थी, जिनकी बड़ी गर्दन लंबी चोंच थी, वह सड़क किनारे पड़े हुए कुछ अनाज के दाने को खाने जमीन पर नीचे उतरी और अपनी चोंच से दाने उठाकर खाने लगी, तभी वहाँ आसपास मौजूद कुछ कुत्ते भी वहाँ पर पहुँच गए और स्टोर्क चिड़िया को अपना शिकार बनाने की कोशिश करते हुए उन स्टोर्क चिड़िया के ऊपर झपटे लेकिन इस हादसे में चिड़िया ने अपनी बुद्धिमानी दिखाते हुए ऊपर उड़ी और उस समय कुत्ते के शिकार से बच गई।

कुत्ते के शिकार से कुछ घायल चिड़ियों ने फिर से वापस लौट कर कुत्ते के पीठ पर अपनी लंबी चोंच मारी और फिर ऊपर उड़ गई।

कुछ देर तक यूँ ही चलता रहा अब कुत्ते को उनसे खतरा सा मंडराने लगा, उसने कुछ दूरी तक दौड़ लगाई ताकि उन चिड़ियों से बच सके। परन्तु उन चिड़ियों ने भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते रही, जिस दिशा में कुत्ते जाते वहाँ-वहाँ तक आसमान में उड़ते हुए ऊपर से नीचे की ओर आकर कुत्ते की पीठ पर चोंच मारते हुए फिर उड़ जाते लगभग कुछ लंबी दूरी तक उन कुत्तों को खदेड़ती रही और वहाँ से वापस उड़ते हुए अपने उसी स्थान पर आकर दाना खाने लगी।

लेकिन कुत्ते अभी भी जान बचाने के चक्कर में भाग ही रहे थे। उन्हें लग रहा था, कि चिड़िया अभी भी उनके पीठ के ऊपर उड़ रही है। जबकि चिड़िया उनको चकमा देकर वापस आ गई थी और उसी जगह पर आकर अनाज के दाने चुगने लगी थी। अब उन्हें भी लगने लगा हम सुकून से दाना खा सकते है। खतरा अब टल गया है।

अंतर्मन की आवाज

रामनरेश शर्मा जी बैंक में अधिकारी के पद पर कार्यरत रहे हैं, वे शहर में रहते हैं, उनका पैतृक गांव शिवपुर है, जो सड़क से 3 किलोमीटर अंदर है। वहाँ के ग्रामीण इलाकों में सुविधायें उपलब्ध नहीं है, गांव वाले अल्प सुविधाओं में ही गुजर बसर कर लेते हैं। यहाँ से गाँव जाने के लिए केवल एक ही बस आने जाने के लिए उपलब्ध है, यह बस सुबह गाँव की ओर जाती है और शाम को उधर से गाँव के तरफ जाने वाले यात्रियों को खचाखच भरते हुए लौटती है।

रामनरेश शर्मा जी सर्विस के दौरान अवकाश के दिन अपने पैतृक गांव शिवपुर बस से ही गये वहाँ दिन में अपने परिवार जनों के साथ आसपास मौजूद क्षेत्रों में घूमकर घर की ओर जाने के लिए रवाना हुए, अब शाम भी हो रही थी। शहर लौटने के लिए तीन किलोमीटर पैदल चलकर सड़क मार्ग तक पहुँचना था और बस पकड़नी थी, गांव से तीन किलोमीटर पैदल चलकर सड़क मार्ग पर बस का इंतजार करने लगे थोड़ी देर बाद उन्हें दूर से बस आती हुई नजर आई और पास आने पर उन्होंने हाथ हिलाकर बस को रोकने का इशारा किया, लेकिन बस वाले ने बस को नहीं रोका और उनके सामने से ही बस तेज रफ्तार से आगे बढ़ाकर निकाल ली, वो भौचक्के से रह गए और मन में कहने लगे कैसा ड्राइवर है। गाड़ी रोकी ही नहीं फिर कुछ देर रुककर सोचने लगा शायद आगे चलकर गाड़ी रोकेगा, शायद मुझे देख तो लिया होगा। कोई बात नहीं फिर "अंतर्मन से आवाज आई" कहने लगा – "जा रे! बस वाला मुझे बस में नहीं बैठाया, ये तूने अच्छा नहीं किया। आज तेरी बस बिगड़ जाये या किसी कारण से रुक जाये।

अब रामनरेश शर्मा जी असमंजस में पड़ गए, उन्हें सुबह ऑफिस पहुँचना जरूरी था और घर जाने के लिए पहला विकल्प - तीन किलोमीटर पैदल चलकर पुनः शिवपुर जाये या दूसरा विकल्प -आगे बढ़ने के लिए दस किलोमीटर दूर पैदल चलकर कोई साधन उपलब्ध हो सकता था, वे दस किलोमीटर पैदल ही वहाँ से चल पड़े और अंतर्मन में सोचते जा रहे थे, कि वैसे तो बस यात्रियों से खचाखच भरी हुई थी। लेकिन बस वाला अकेला मुझे भी बैठा लेता तो क्या बिगड़ जाता, जैसे तैसे आगे बढ़ते हुए हनुमान चालीसा पढ़ते राम जी का नाम लेते हुए, अपने गंतव्य स्थान तक पहुँच ही गये। वहाँ पहुँचते ही एक जीप आयी उन्होंने फिर हाथ से इशारा करते हुए गाड़ी रोकी और उसमें बैठ गये। जीप अब शहर की ओर तेजी से चली जा रही थी। तभी उन्होंने रास्ते में देखा वही बस जो उन्हें पीछे छोड़ कर आ गई थी, बीच रास्ते में किनारे खड़ी हुई थी, उस बस का टायर पंचर हो गया था और यात्री सवारियाँ भी हैरान-परेशान से खड़े हुए थे। ये दृश्य देखकर रामनरेश शर्मा जी ने राहत की सांस ली और कहा –"जो होता है अच्छे के लिए ही होता है" चलो थोड़ी सी परेशानी उठाने के बाद अब मै आराम से घर जा रहा हूँ।

ऐसा कहा जाता है कि "माँ सरस्वती जी कंठ में विराजमान रहती है और हमारे अंर्तमन से निकली हुई आवाज प्रायः उन तक पहुँच जाती है जहाँ तक हम पहुँचाना चाहते हैं।

दोस्ती की अनोखी मिसाल

रामचरित मानस में एक चौपाई लिखी गई है, धीरज, धर्म, मित्र, अरु नारी। आपद काल परिखिये चारि। अर्थात विपत्ति का ही वह समय होता है, जब हम धीरज, धर्म, मित्र और नारी या पत्नी की परीक्षा कर सकते हैं, सुख में तो सभी साथ देते हैं, लेकिन दुःख तकलीफ में जो साथ दे वही हमारा सच्चा हितैषी होता है।

प्रवीण और विनय एक ही संस्थान में कार्यरत है और आपस में एक पड़ोसी सच्चे दोस्त भी है, दोनों परिवार मिलकर रहते हैं ऐसा लगता है। मानो सगे भाइयों से भी बढ़कर दोस्ती की अनोखी मिसाल है, एक दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। दिसम्बर में अत्यधिक ठंडी पड़ने पर भी विनय ठंडे पानी से नहाता था। जिसकी वजह से सर्दी जुकाम बुखार हो गया, ज्यादा ठंडी बैठ जाने से निमोनिया हो गया और फेफड़ों में कफ जमा होने के कारण सांस लेने में दिक्कत होने लगी थी और हालात काफी बिगड़ने लगी तो परिवार वालों ने सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन रोग का ईलाज ठीक से नहीं हुआ।

फिर विनय के दोस्त को जब जानकारी मिली तो वह अपने दोस्त को देखने अस्पताल गया और विनय की सेहत में कोई सुधार को देखते हुए परिवार वालों को सलाह दी किसी अच्छे अस्पताल में भर्ती कराया जाय और जब अच्छे बड़े डॉक्टरों ने जाँच किया तो जाँच के दौरान सामने आया, कि निमोनिया बढ़ जाने से ब्लड में हीमोग्लोबिन की मात्रा 5 % नीचे हो गया था। वैसे स्वस्थ व्यक्ति में 13.5 से 17.5 प्रति डेसी लीटर होती है। डॉक्टर ने ब्लड चढ़ाने के लिए कहा और खून की जाँच के बाद ब्लड बैंक से ब्लड लेकर चढ़ाया गया, ये सारी व्यवस्था विनय के दोस्त प्रवीण ने की थी, क्योंकि विनय के अभी बच्चे छोटे है और घर परिवार के सभी लोग बाहर रहते है। धीरे-धीरे विनय की सेहत में सुधार होने लगा अब वह पूरी तरह स्वस्थ अनुभव करने लगा था। संकट की स्थिति टल गई थी। अस्पताल का खर्चों का भार वहन प्रवीण ने ही किया था, डेढ़ लाख रूपये का बिल जमा करने के बाद अस्पताल से छुट्टी करवा ली। बाद में विनय ने प्रवीण के पूरे पैसे वापस लौटाए विनय को स्वस्थ देखकर सभी बहुत खुश हुए आखिर दोस्ती की अनोखी मिसाल कायम कर विनय को नया जीवनदान मिल गया था। स्नेहिल प्रेम के बंधनों में बंधकर प्रवीण ने विनय की खातिर दोस्ती का फर्ज अदा किया और विनय और प्रवीण के परिवार में फिर से ख़ुशी की झलक दिखाई दी।

विभूति का संघर्ष

रतनपुर गांव में एक मध्यम परिवार रहता है, जिसमें तीन बहन और दो भाई है, तीनों बहनो में विभूति की शादी और बहन की शादी इतेफाक से एक ही घर में ब्याही गई थी। दोनों देवरानी, जेठानी बन गए थे। विभूति पढ़ाई में हमेशा आगे ही रहती थी, स्नातक तक की योग्यता हासिल कर ली थी।

दुर्भाग्यवश शादी के बाद विभूति को आँखों में हर्पिस नामक वायरस से संक्रमण हो गया, उसकी आँखों की स्थिति बहुत ही खराब हो गई और उसे दोनों आँखों से दिखना बंद हो गया था। इसके कारण जीवन अंधकारमय हो गया था। विभूति के घर वाले, ससुराल पक्ष वाले सभी लोगों ने बड़े-बड़े नेत्रालयों में जाकर उसकी आँखों को दिखलाया लेकिन आँख के रेटिना में खराबी आ जाने के कारण डॉक्टर मजबूर हो गए फिर भी घर के सभी लोगो ने प्रयास जारी रखा, ताकि उसकी आँख ठीक हो जाय। सौभाग्य से विकलांग कोटे में उसे वित्तीय संस्थान में जॉब मिल गई थी। वह अपनी बड़ी बहन याने जेठानी के साथ ही रहती है और पति रमेश गांव में खेती किसानी करता है, विभूति से मिलने आते रहता है।

विभूति को जॉब में जाने के लिए संस्थान वाले ने वाहन की सुविधा उपलब्ध करायी गई है, वह कम्प्यूटर में आवाज के सहारे कार्यों को बखूबी पहचान लेती है, खाली बैठे रहना उसे पसंद नहीं है, घर के अधिकतर कार्यों को खुद अपने हाथों से करती है, भले ही देख नहीं पाती है, लेकिन ज्ञाननेद्रियों के सहारे सामने वाले की दिल की बात और आने वाले खतरे का पूर्वानुमान करने में भी सक्षम है और अपने को बुलंद करके आँखों से दिखाई नहीं देने पर भी जीवन सफर में अग्रसर है।

तोड़ न पाये कोई हिम्मत को, खड़ी रहूँगी डटी रहूँगी।
मुश्किलें कितनी भी आ जाये, अडिग विश्वास लिए हुए, आगे ही कदम बढ़ाऊँगी।

पापा की याद में

माँ की महिमा की बखान तो हर कोई किया करता है, लेकिन पापा के गुणों का बखान बिरले ही करते हैं। सोनपरी के पिताजी स्वर्गीय श्री रतनलाल जी पुलिस विभाग में वरिष्ठ इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। उनके पदस्थ पुलिस थाने के अंतर्गत 22 गाँव के लोगों में दबदबा कायम था, सारे गांव के लोगों की किसी न किसी रूप से सहायता की थी, इसकी वजह से पदस्थ इलाकों में उनका सम्मान था।

श्री रतनलाल असामाजिक तत्वों के प्रति कठोर व्यवहार करते बाकी गाँव वालों के प्रति।

दयालु प्रवृति के व्यक्ति थे, अपनी ड्यूटी के साथ-साथ समाज में जरूरत मंद व्यक्तियों की आर्थिक रूप से मदद करते गरीब परिवार की कन्याओं की शादी करवाते, दलित वर्गों को यथायोग्य उनकी जरूरतों को पूरा करते इस कारण से सम्माननीय रहे हैं। श्री रत्नलाल जी के दो बेटे और प्यारी सी बेटी लाडली सोनपरी, जिसे हमेशा खुश देखना चाहते थे। यदि कोई भी बेटी को कुछ कह देता तो उन्हें अच्छा नहीं लगता था। सोनपरी पापा की बेहद लाडली बेटी है, प्यार से उसे सोनू कहकर पुकारते थे। शादी हो जाने के बाद शहर से दूर चली गई और उसके पति शासकीय कर्मचारी के पद पर कार्यरत है।

एकलौती बेटी होने ससुराल पक्ष में सभी लोगों के बीच तालमेल बैठाने में थोड़ी सी परेशानी होती थी। इस कारण पिताजी चिंतित रहते थे, कुछ दिनों से स्वास्थ्य अचानक से खराब हो गया और सेवा निवृत्त होने के बाद बैकुंठ धाम को चले गए। लाडली बेटी पापा की याद में आँसू बहाते हुए, हर पल सुनहरी यादों में ही खोये रहती थी, उनके जज्बातों को याद करते रहती है। देखते ही देखते एक साल बीत गया उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर सारे गाँव के लोगों का जन सैलाब उमड़ पड़ा था। सभी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुँच गए।

उनकी नेकदिली आदर्श व्यक्तित्व की गाथाओं को याद करते हुए आँखों से अश्रु धारा बहा रहे थे, मानो कह रहे हो कि हे ! महापुरूष फिर से वापस लौट कर हमारी मदद कर उद्धार करो। रत्नलाल जी की कार्य प्रसिद्धि नामों से ही नहीं वरन उनके नेक काम अच्छे कर्मों के कारण ही पहचाना जाता था।

सोनपरी भी सारे दुःखों को भूलकर रिश्तों को मजबूती में बांधकर दूसरों की खुशियों में अपने आपको ढालते हुए जिम्मेदारियों का बोझ उठाते हुए नई दिशाओं में अग्रसर हो गई। यूँ तो दुनिया के सारे गम हँस कर झेल लेती हूँ। दर्द कैसे बयाँ करूँ आपके चले जाने के बाद में।

हौसला जो बंधे रहता था, ख्वाबों को सजाने का हर शख्स का वजूद होती है, बेटियाँ दिल में यही अरमान लिए एक नई पहचान के साथ।

संयोग ... शुभ मुहूर्त का

रमेश के घर में शादी थी, घर छोटा होने के कारण मेहमानों को रुकने की व्यवस्था बाहर टेंट लगाकर की गई थी, लेकिन अचानक से तेज आंधी तूफान बारिश होने के कारण व्यवस्था गड़बड़ हो गई थी। जैसे-तैसे पड़ोसियों के घर में रुकने की व्यवस्था की गई। बारात शाम को बस द्वारा वधू पक्ष के स्थान तक रवाना की गई बारात पहुँचने के बाद कुछ चाय पानी, नाश्ते की व्यवस्था की गई थी। जलपान कराया गया। फिर वहाँ से दूल्हे को घोड़ी पर बिठाया गया, बैंड बाजे के साथ दूल्हे को घोड़ी पर बैठाकर लाया गया और कुछ दोस्त फटाखे फोड़ने लगे, जलते हुए फटाखों की कुछ टुकड़े घोड़ी के मुँह पर छिटक गए।

जिससे घोड़ी बिचक गई और हिनहिनाते हुए दो पैर पर खड़ी हो गई और दूल्हा बेचारा जमीन पर गिर पड़ा। वर पक्ष के लोग दूल्हे को उठाया और जनवासे में ले गए वहाँ कुछ देर ठंडा पानी, शर्बत पिलाया फिर आराम से पुनः उसी घोड़ी पर बिठाया परन्तु बिचकी हुई घोड़ी अभी भी संयत नहीं हुई थी, चढ़ते से ही दोनों पैर पर खड़ी होकर दूल्हे को फिर से जमीन पर पटक दिया था।

अब वर पक्ष के लोगों ने अब कुछ दूसरा इतंजाम किया जाय तो एक स्कूटर मंगवायी जिसमें दूल्हे मियाँ उल्टा मुँह करके पीछे स्टेपनी पकड़ कर बैठ गया सारे बाराती पीछे पीछे चलते जा रहे थे।

बैंड बाजे फिर बजने लगे बाराती डांस करने लगे थे। कुछ तो नशे में झूम रहे थे और रास्ते में बीच में झुमा-झटकी होने लगी थी, पिताजी जरा सा नाराज होने लगे थे, जैसे-तैसे बारात विवाह स्थल तक पहुँची।

शादी स्थल पर द्वार पर पहुँचने के बाद दूल्हे का स्वागत किया गया, फिर वरमाला की रस्म अदायगी करने जब दूल्हा-दुल्हन स्टेज पर गए, तो परिवार के कुछ सदस्य भी वहाँ पहुँच गये, दूल्हे के दोस्तों ने भी फोटो खिंचवाने के लिए मंच पर चढ़ गए और स्टेज मंच धसक गया दूल्हे मियाँ दो तख्तों के बीच फंस गए थे, चारों तरफ अफरा तफरी सी मच गई थी।

दूल्हे को उठाकर ऊपर लाया गया उसके बाद सारे कार्यक्रम निरस्त करके पहले सभी ने खाना खाया फिर बाकी की रस्म अदायगी भी पूरी की गई थी।

अतंतः शादी में आये व्यवधान उत्पन्न होने से परेशान लोगों को अब सीख मिल गई थी, कोई भी शुभ कार्यों में मुहूर्त का होना आवश्यक है।

शुभ मुहूर्त न होने के कारण व्यवधान उत्पन्न होते रहते हैं, लेकिन थोड़ी सी सूझबूझ समझदारी से कार्यों को आसानी से किया जा सकता है। आसपास मौजूद घटनाओं से सबक सीखा जा सकता है, वैसे मुसीबतें कह कर नहीं आती है, कुछ भी

कहीं भी अचानक से घटनायें घटित हो जाती है, लेकिन परेशानी का हल शांति पूर्वक समझौते से निकलता है। हमें इस तरह की घटनायें शिक्षा दे जाती है।

मन की झोली

मन सुई के समान है, जो मस्तिष्क में चल रहे तरंगो से कार्य प्रणाली को नियंत्रित कर जीवन के ताने बाने को बुनता रहता है, एक दूसरे से जुड़कर कहीं न कहीं किसी भी रूप में आगे बढ़ने के लिये मन को केंद्रित करता है, जब मन जीत जाता है और मन की झोली खुशियों से भर जाती है, कहा भी गया है -"मन के हारे हार है और मन के जीते जीत" स्वाति पाँच भाई बहनों में सबसे बड़ी बेटी है। पिताजी बैंक में ब्रांच मैनेजर थे, बैंकों में चार साल बाद तबादला हो जाता था, जिसकी वजह से सभी भाई बहनों की पढ़ाई स्कूल बदलने के चक्कर में परेशानी उठाना पड़ता था। इसलिए स्थाई जगह पर सभी के पढ़ने की व्यवस्था कर दी गई थी।

स्वाति आठवी की परीक्षा देने के बाद माँ के साथ घर के कामों में हाथ बटाती और छोटे भाई-बहनों की देखभाल करती, क्योंकि पिता जी का तबादला हो जाता वहाँ चले जाते थे। एक दिन ताऊ जी का बेटा सुरेश घर आया, उन्होंने स्वाति को घर के काम करते हुए देखा तो चाचा जी से पूछा! स्वाति स्कूल नहीं जा रही है, तो चाचा जी ने कहा- "ज्यादा पढ़ लिखकर क्या करेगी। आगे भी यही चूल्हा चौका घर गृहस्थी संभालनी है, वैसे भी हमारे परिवार में लड़कियाँ ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं है, "यह सुनकर सुरेश चौंक गये और स्वाति एक कोने में दुबक कर रोने लगी थी। सुरेश बहन को रोते हुए देख समझाया फिर सुरेश ने चाचा जी से बैठकर बातें की कहने लगे अभी तो पढ़ने-लिखने की उम्र है। बाद में सभी को गृहस्थी तो संभालनी ही है। अतंतः स्वाति के पिताजी आगे पढ़ने जाने के लिए राजी हो गए थे।

स्वाति ने आठवी क्लास का रिजल्ट आने के बाद नवमी में विज्ञान विषय ही लिया था। हायर सेकेंडरी स्कूल तक पढ़ाई पूरी करने के बाद स्वाति ने सोचा कि अब विज्ञान विषय आगे चलकर नहीं पढ़ पायेगी, फिर कॉलेज में कला संकाय विषय लेकर दाखिला लिया। तीन साल बी.ए. स्नातक डिग्री हासिल की उसके बाद स्वाति ने समाचार पत्र में लेखन का कार्य शुरू किया। कुछ रचनाएँ अख़बार में प्रकाशित हुई अब मनोबल बढ़ने लगा था। रेडियो स्टेशन पर भी कुछ प्रोग्राम के द्वारा नई चेतना जागृत हुई प्रंशसा हौसला अफजाई से काम करने की क्षमता दोगुनी हो गई थी।

पुनः मन को समझाते हुए एम.ए. मनोविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय से पढ़ने की ठानी, लेकिन अंग्रेजी माध्यम से मन फिर से डांवाडोल होने लगा था, परन्तु सहयोगी मित्रों के द्वारा संभव हो पाया था। जैसे तैसे एम.ए. मनोविज्ञान की उपाधि प्राप्त हो गई, नए सिरे से मन को परिवर्तित कर उस मुकाम पर पहुँच गई जहाँ गर्व महसूस करते हुए

पिताजी कहने लगे मुझे तुम पर गर्व महसूस हो रहा है और हमारे परिवार में बेटियाँ इतनी आगे अभी नहीं बढ़ी है।

बस कुछ दिनों बाद ही स्वाति की शादी हो गई आकाशवाणी रायपुर से उदघोषिका के हेतु साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था। लेकिन शहर से दूर होने के कारण मन उदास हो गया था। बड़ी बेटी का जन्म होने के बाद शिक्षिका बनने की ललक जागी, तो उन्होंने बी.एड. की डिग्री की मांग की बेटी के 2 साल होने के बाद बी.एड . की परीक्षा भी दिलाई, प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर मन खुश हुआ। अब स्वाति ने सोचा कोई भी कार्य असंभव नहीं है, अगर मन में ये ठान लें जिद्द पकड़ लें करना ही है।

ईश्वर ने भले ही हमें जैसा भी बनाया है, सर्वगुण सम्पन्न तो किसी को नहीं बनाया है। लेकिन कुछ न कुछ कर्मो से बेहतर साबित करने की कोशिश लगी रहती है। स्वाति ने आगे भी लेखन कार्यों में योगदान देती रही मन के तरंगो से लोगों तक अपनी बातों को पहुँचाने की प्रेरणा स्त्रोत्र बन गई, ताकि मन इधर-उधर भटकने न लगे। अंदर का बीज प्रस्फुटित हो इधर-उधर मन भटकने न लगे खुद को शुद्ध वातावरण में ढालकर आसपास मौजूद शक्तियों से मन की झोली को खुशियों से सरोबार कर सके।

बुढ़ापा

हर व्यक्ति बुढ़ापा के चंगुल में आ ही जाता है ये प्रकृति चक्र है फिर भी मन में डर सा बने रहता है ना जानें क्या होगा...? बुढ़ापा कैसे व्यतीत होगा...असहनीय दर्द... अकेलापन.. तन्हाइयाँ ....निसहाय काटने को दौड़ती है न जाने कैसी हालात होगी..कौन सहारा देगा बस यही सोचते हुए कर्म बंधन की मुक्ति का मार्ग ढूढ़ते इतंजार की घड़ियां गिनते हुए अतीत के पन्नों को दोहराते हुए अपने ही कर्मों को दोषी ठहराते रहते हैं।

रामप्रसाद जी नौकरी करके सेवा निवृत्त हो गए उनके सात बेटे एक बेटी सभी अच्छे पदों पर कार्यरत शहर में अलग अलग जगहों में रहते हैं सिर्फ छोटा बेटा बहू गाँव में उनके साथ रहकर उनकी सेवा करते हैं बाकी कभी कभी कुछ कार्यक्रम में शादी व्याह में आकर बाबूजी से मिल जाया करते हैं।

रामप्रसाद की पत्नी रोहिणी भी उम्र के साथ बी.पी. ,शुगर की मरीज होने के कारण उन्हें दो बार अटैक आ चुका अब शरीर के एक हिस्से में लकवा मार दिया है तो चलने फिरने काम करने में असमर्थ है छोटे बेटा -बहू ,बच्चे रामप्रसाद जी स्वयं जिम्मेदारियों को निभाते है सारी सुख सुविधाएं उपलब्ध कराने के बाद खेती बाड़ी सम्हालना वर्तमान स्थिति का निर्वहन करते हुए व्यतीत करते हैं।

बुढ़ापे में ऐसा लगता है कि बच्चे साथ में रहें सहारा दे, मदद करते रहे और खुश रखें यही आस लगाए रखते हैं ।रामप्रसाद जी व पत्नी रोहिणी खुद अपना कार्य कर लेते थे लेकिन अब बुढ़ापे के साथ शरीर कमजोर लाचार मजबूर हो चला है तो कभी कभी सारे बच्चों से कहती है -"कि सात बेटों को पाल पोष कर बड़ा किया है लेकिन आज एक माँ को सात बेटे नहीं पाल सकते हैं "बोझ बन गई हूँ" सहारा देने, सेवा करने के लिए वक्त ही नही है अपने घर में रखने के लिए भी इधर उधर का बहाना बना लिया करते हैं अपने उम्र में बहुत सारे कामों का बोझ लेकर सारे परिवारों की शादी व्याह अकेले ही निपटा लिया करती थी लेकिन आज अपाहिज की तरह लाचार, मजबूर हो गई हूँ दूसरो पर आश्रित रहकर इन आँखों से टकटकी लगाए निसहाय बुढ़ापे के असहनीय पीड़ा को झेल रही हूँ"

"जो आज है वो कल भी नही रहेगा और जो अतीत में गुजर चुका है वो भी समय के साथ साथ बदल जायेगा समय बड़ी तेजी से निकलता जा रहा है सभी समय को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ने के चक्कर में सब पीछे की परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं.. नये युग की आगाज़ से नई दिशा की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

बुढ़ापा एक असहनीय दर्द पीड़ा है लेकिन मल्हम के रूप में जो सामने रहकर जैसा उचित जान पड़े सेवा करता है तो उसे सहर्ष स्वीकार करते हुए ईश्वर आराधना में लीन हो जाना ही कर्म बंधन से मुक्ति का मार्ग ही असली जीवन है..!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - शशिकला व्यास

जन्म - 04 अक्टूबर 1968, भोपाल (म.प्र.)

शिक्षा - बी.ए., एम.ए. (मनोविज्ञान) एवं बी.एड.

ई मेल - kumar_30k@rediffmail.com

मो. - 7354493281

प्रकाशन - मन का पंक्षी (काव्य संग्रह)

सम्मान - - अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019

लेखन का उद्देश्य -

हरेक चीजें जो प्राकृतिक रुप से मौजूद है, जिसकी रचना ईश्वर ने की है, उसमें दिलचस्पी रखती हूँ। रचनाओं द्वारा जो संदेश हम लोगों को प्रसारित करते हैं वह एक दूसरे के मन की भावनाओं को अभिव्यक्ति करने का एक सशक्त माध्यम है। लेखन, पठन-पाठन ऐसी सामग्री युक्त प्रतिक्रियाएं है जो चेतन मन से अभिव्यक्ति व संचालित होती है इसके लिए अभ्यास व नियंत्रण की आवश्यकता नहीं होती है और न ही कोई मार्गदर्शन की जरुरत पड़ती है। अंतर्मन की शक्ति को उजागर करने के लिए एक दूसरे की मन की भाषा को समझने का केन्द्र है हमें इन्हीं भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नई उमंगो के साथ भरपूर आनंद एवं सहयोग मिलता है। रचनाओं की मौलिकता अपने आप में सत्यता की परख लिए हुए यथार्थ परिपूर्णता लक्ष्य की ओर तर्क संगत जुड़े तथ्य को सामने लाने की बेहद खूबसूरत प्रक्रिया है और इसका प्रयास मैने अपनी रचना प्रक्रिया में किया है।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-73-4
मूल्य- 60/-